5

कर्नाटक के देवगड़ द्वीप में पक्षियों की जैवविविधता

मिरियम पॉल श्रीराम, * पी लक्ष्मीलता, अजू के राजू, दिव्या विश्वम्भरन, के आर श्रीनाथ, जैस्मिन एस, ** रंजित एल, [1] पी आर बेहेरा, [2] आर शरवणन, [3] रामकुमार, के के जोशी, [4] एन जी वैद्या और [4] सोनाली एम

भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ, कोच्ची, केरल

* सी एम एफ आर आइ, मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई, तमिलनाडु

** सी एम एफ आर आइ, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र, टूटिकोरिन, तमिलनाडु

[1] सी एम एफ आर आइ, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र, विशाखपट्टणम, आंध्रा प्रदेश

[2] सी एम एफ आर आइ, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, मंडपम कैंप, तमिल नाडु

[3] सी एम एफ आर आइ, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई, महाराष्ट्र

[4] सी एम एफ आर आइ, कारवार अनुसंधान केन्द्र, कारवार, कर्नाटक

देवगड़ द्वीप कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले में स्थित कारवार नगर के तट से दस किलोमीटर दूरी पर अरब सागर में स्थित है. असल में यह चार छोटे द्वीपों का समूह है जिसमें से पश्चिमी द्वीप पर एक प्रकाशस्तम्भ और उसकी देखभाल करने वाले कर्मचारियों का आवास है. इस द्वीप का घेर लगभग 1 वर्ग किलोमीटर है और आस पास का समुद्री इलाका 11 वर्ग किलोमीटर. इस द्वीप के चारों तरफ के समुद्र तटों की जैवविविधता का अध्ययन 2015 से 2017 तक हुआ. इस दौरान यहाँ उपलब्ध पक्षियों के बारे में भी गवेषण हुआ.

छोटा किलकिला

देवग़ाड द्वीप का तलरूप पथरीला है. यह उत्तर कन्नड़ के तट पर स्थित सहदिरी पर्वतावली का एक ढांचा है. इसलिए इस द्वीप पर उपलब्ध वनस्पति और पक्षियों में भी सहदरी के जैवविविधता के नमूने पाए जाते हैं. देवग़ाड का तट बड़ी बड़ी चट्टानों से घिरा हुआ है. बाकी ज़मीन पहाड़ी है और वृक्षों और झाड़ियों से आंच्छादित है. बरसात के मौसम में हरियाली बढ़ जाती है और तट की चट्टानों पर शैवाल और पहाड़ी इलाकों में घास बड़े पैमाने पर उगता है. इस दौरान एक दुर्लभ किस्म का केले का पेड़ भी यहाँ उगता है जिसके फल में बड़े बड़े बीज होते

हैं. इन वृक्षों और झाड़ियों के भीतर और आस पास के समुद्र में 15 परिवारों और 18 जातियों के 18 श्रेणियों के पक्षियों का वास है.

यहाँ दो तरह के पक्षी पाए जाते हैं, एक जो साल भर यहाँ रहते हैं (निवासी) और दूसरे जो ऋतु के बदलने के अनुसार आ जाया करते हैं प्रवासी. निवासी पक्षियों में आम तौर के पक्षी भी हैं जैसे घरेलु कौआ *Corvus splendens* और काला चील *Milvus migrans govinda* इनकी सर्वभक्षक आहार रीति के कारण यह अन्य जगहों की तरह यहाँ भी पाए जाते हैं. इन साधारण वर्गों के आलावा सह्यादिरियों में पाए जाने वाले डुबकी लगाने वाले पक्षी, 1 बगुला और 6 पसेरीन पक्षी भी हैं. बगुलों का प्रतीक अँधा बगुला *Ardeola greyii* है और डुबकी लगाने वाले छोटा किलकिला *Alcedo atthis* और बड़ा किलकिला *Halcyon smyrnensis* है.

यह तीनों वर्ग तट की चट्टानों से समुद्र में मछली व केकड़े पकड़ते हैं. साल भर यहाँ पाए जाने वले पसेरीन में दियोरा *Prinia socialis* और सिपाही चिड़िया *Phylloscopus trochiloides* हैं. दियोरा पानी के आस पास झाड़ियों और पेड़ों पर रहेने वाली चिड़िया है जिसका सर, पूँछ व पंख सलेटी और छाती हल्की पीली होती है. सिपाही चिड़िया एक जैतूनी रंग की आम चिड़िया है जो केवल प्राणियों को खाती है. एक और पसेरीन है काला कटकटिया *Hypothymis azurea*. जंगलों का यह पक्षी कभी झुण्ड में नहीं पाया जाता है. इसका नर पक्षी सुनहरे नीले रंग का होता है जिसके सर का पिछला भाग काला होता है. मादा भूरी होती है जिसका सर हलके नीले रंग का और छाती हलके पीले रंग की होती है.

बाकी दो तरह के पसेरीन पक्षी प्रवासी हैं. इनमे से सलेटी खंजन *Motacilla cinerea* एक ऐसा वर्ग है जो हिमालय में गर्मी बिताने के बाद सर्दियों में दक्षिण भारत में पहुँचता है. दक्षिण भारत में यह खा पीकर तन्दुरुस्त बनते हैं और गर्मियों के लौटने पर हिमालय क्षेत्र में वापस जाकर अंडे देती हैं और नवजातों का पालन पोषण करते हैं. इसे पहचानना आसान होता है. इसका ऊपरी भाग हल्का सलेटी और छाती और पेट पीला होता है. लगभग मैना के आकार के इस पक्षी की पूंछ हमेशा ऊपर नीचे हिलती रहती है. पानी के आस पास ही इसका वास होता है. एक और घुमन्तु वर्ग है-रोजी पास्टर *Pastor roseus* जो एक

ब्राह्मणी झील

पतिरंगा

कोहासा

तरह की मैना होती है. यह सर्दियों में बड़े बड़े झुंडों में यूरोप से भारत आती है. इस सुन्दर पक्षी का रंग गुलाबी और काला होता है मगर मादा मैना जैसे भूरे रंग की होती हैं. इस द्वीप पर केवल एक मादा पक्षी पाई गयी थी जो किसी जख्म के कारण यहाँ से गुजरने वाली झुण्ड से बिछड़ कर रह गयी थी.

दो और कीट भक्षी पक्षी इस द्वीप पर पाए जाते हैं. एक है काला कोतवाल *Dicrurus macrocercus* और दूसरा पतरिंगा *Merops orientalis*. काला कोतवाल अपने नाम के अनुरूप एकदम काला पक्षी है. यह अति साहसी है और अपने से बड़े पक्षियों से डरता नहीं है. अपने इलाके की यह डटकर रक्षा करता है. अन्य छोटे पक्षी अक्सर इसकी शरण में बड़े पक्षियों से रक्षा प्राप्त करते हैं. हरा पतरिंगा एक सुन्दर पक्षी है. इसके पर झिलमिलाते हरे रंग के है जिसमे नीले रंग का मिश्रण है. सर पर नारंगी रंग की टोपी है और चोंच के कोने से आंख के पार तक एक काली लकीर है. दोनों पक्षियों के कीट शिकार की समान रीति है. यह पेड़ की एक टहनी से बार बार उड़ते कीटों को पकड़ने के लिए सीमित उड़ान भरकर उसी टहनी पर वापस लौटते हैं.

एक और निवासी पक्षी है एशियाई कोयल *Eudynamys scolopaceus*. बरसात के मौसम के कुछ हफ्ते पहले नर कोयल मादा कोयल को आकर्षित करने के लिए मधुर गीत गाते हैं. इस समय कौए भी अपने घोंसले बनाना शुरू करते हैं. कोयल एक परजीवी है जो खुद घोंसले न बना कर कौओं के घोसलों में अंडे देती है. कोयल के चूजे 13 से 16 दिनों में निकलते हैं जबकि कौए के 17 से 20 दिन लगाते है. अंडे से निकलते ही कोयल के चूजे बाकी अण्डों को घोंसले से गिरा देते हैं. कोयल के चूजों को कौए अपना समझ कर पालते हैं. इस प्रकार कोयल कौओं की आबादी को कायम रखने में एक परिस्थिथिक कड़ी है.

देवग़ाड द्वीप पर अनेक ब्राह्मिनी चील *Haliastur indus indus* भी पाए गए जो भारतीय तट और मात्स्यिकी बंदरों का पक्षी है. यह सुन्दर चील गाढ़े भूरे रंग का होता है जिसका सर और छाती एकदम सफ़ेद होती है. इसी तरह द्वीप पर एक और स्थाई वासी है जो कर्नाटक के तट का प्रतीक है. यह है कोहासा *Haliaeetus*

सुराखिया

leucogaster. यह समुद्री गरुड़ सफ़ेद रंग का है जिसके पंख हल्के काले रंग के होते हैं. इस राजकीय पक्षी की एक जोड़ी इस द्वीप के ऊचे पेड़ों पर अपना घोसला बनाकर बसी हुई है. अध्ययन के दौरान इस गरुड़ जोड़ी का प्रेमालाप प्रदर्शन अक्तूबर और नवंबर महीनो में देखने को मिला. दिसम्बर में इनके घोसले में अंडे थे जो जनवरी तक उभरित हो गए. दो चूजे जीवित रहे जिन्होंने मार्च में उड़ान भरना शुरू किया. कोहासा का मुख्य भोजन मछली और समुद्री सर्प होते हैं. भोजन पाने के लिए यह अन्य चील, कौओं या ऊद से भी शिकार छीन लेते हैं. इसके बड़े आकार और आक्रामक व्यवहार के कारण अन्य पक्षी और जीव जंतु कोहासा से डरते हैं.

अक्टूबर से लेकर मार्च तक देवगड के आस पास के समुद्र में दूर प्रदेशों से आये घुमन्तु पक्षी पाए जाते हैं. इनमे से एक सुराखिया *Chroicocephalus brunnicephalus* है जो प्रजनन के बाद मध्य एशिया के ठन्डे अक्षांशों से भारत के समुद्री तटों और बड़ी झीलों में पहुँचते हैं. देवग़ाड के आस पास भी ये मछली पकड़ते नज़र आते हैं. इस दौरान इनका भूरा सर सफ़ेद हो जाता है जो सर्दी के अंत में फिर प्रजनन के समय पर भूरा बन जाता है. एक और घुमन्तु पक्षी है लाल तेर्नस्तोन *Arenaria interpres* जो उत्तर अमरीका और यूरोप के उत्तरी अक्षांशों से सर्दियों में विश्व के उष्णकटिबंधीय इलाकों में अप्रजननीय समय बिताते हैं. जुलाई 2016 में इसके एक झुण्ड को देवग़ाड के अंतर्ज्वारिय क्षेत्रों में पाया गया जहाँ वो समुद्री शैवालों के बीच खाद्य ढूँढ़ते नज़र आये. ये इस ऋतु एवं इलाके के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण अभिलेख है. इसे विश्व के प्रमुख पक्षियों के

देवग़ड में पाए जाने वाले पिक्षयों का वर्गीकरण नामकरण:

क्रम सं.	क्रम	परिवार	वर्ग	साधारण नाम	स्थिति
1	अक्सिपित्रफोर्म्स Accipitriformes	अक्सिपित्रड़े Accipitridae	*हलियेत्तस लूकोगास्टर* (ग्मेलिन, 1788) *Haliaeetus leucogaster* (Gmelin, 1788)	कोहासा White bellied sea eagle	निवासी
2	अक्सिपित्रफोर्म्स Accipitriformes	अक्सिपित्रड़े Accipitridae	*हालिअस्टर इंडस इंडस* (बोदार्ट,, 1783) *Haliastur indus indus* (Boddaert, 1783)	ब्राह्मिनी चील Brahminy kite	निवासी
3	अक्सिपित्रफोर्म्स Accipitriformes	अक्सिपित्रड़े Accipitridae	*मिल्वस मीग्रंस गोविंदा* सिक्स, 1832 *Milvus migrans govinda* Sykes, 1832	काला चील Black kite	निवासी
4	शराद्रफोर्म्स Charadriiformes	लारिड़े Laridae	*क्रोइकोसेफ़लेस ब्रुन्निसेफलेस* (जेरदों, 1840) *Chroicocephalus brunnicephalus* (Jerdon, 1840)	सुराखिया Ashy prinia	प्रवासी
5	शराद्रफोर्म्स Charadriiformes	लारिड़े Laridae	*जेलोचेलिडों नय्लोटइका* (ग्मेलिन, 1789) *Gelochelidon nilotica* (Gmelin, 1789)	गल बिल्ल्ड कुररी Gull-billed tern	प्रवासी
6	शराद्रफोर्म्स Charadriiformes	स्कोलोपासिड़े Scolopacidae	*अरनेरिया इन्तेर्प्रेस* (लिनेअस, 1758) *Arenaria interpres* (Linnaeus, 1758)	लाल तेर्नस्तोन Ruddy turnstone	प्रवासी
7	कोरासीफोर्म्स Coraciiformes	अल्सेदिनिदे Alcedinidae	*अल्सीड़ो अट्तिस* (लिनेअस, 1758) *Alcedo atthis* (Linnaeus, 1758)	छोटा किलकिला Common kingfisher	निवासी
8	कोरासीफोर्म्स Coraciiformes	अल्सेदिनिदे Alcedinidae	*हल्सयोंन स्म्यर्नीसिस* (लिनेअस, 1758) *Halcyon smyrnensis* (Linnaeus, 1758)	बड़ा किलकिला White-throated kingfisher	निवासी
9	कोरासीफोर्म्स Coraciiformes	मेरोपिड़े Meropidae	*मेरोप्स ओरिएन्तलिस* लाथम, 1802 *Merops orientalis* Latham, 1802	पतरिंगा Green bee eater	निवासी
10	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	सिस्टकोलिडे Cisticolidae	*प्रीनिया सोशिआलिस* सिक्स, 1832 *Prinia socialis* Sykes, 1832	दियोरा Ashy prinia	निवासी
11	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	कोर्विड़े Corvidae	*कोरस स्प्लेंडन्स* वईलोट, 1817 *Corvus splendens* Vieillot, 1817	घरेलु कव्वा House crow	निवासी
12	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	दिक्रुरिड़े Dicruridae	*दिकृरुस मक्रोसेर्कस* वईलोट, 1817 *Dicrurus macrocercus* (Vieillot, 1817)	काला कोतवाल Black drongo	निवासी
13	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	फिल्लोस्कोपिड़े Phylloscopidae	*फिल्लोस्कोपस त्रोकीलोइदेस* (सुन्देवल, 1837) (*Phylloscopus trochiloides* (Sundevall, 1837)	सिपाही चिड़िया Greenish warbler	निवासी
14	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	मोनार्किड़े Monarchidae	*ह्यपोथ्यमिस अजुरिया* (बोदार्ट, 1783) *Hypothymis azurea* (Boddaert, 1783)	काला कटकटिया Black-naped monarch	प्रवासी
15	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	मोटसिल्लिडे Motacillidae	*मोटसिल्ला सिनेरिया* टनस्टाल, 1771 *Motacilla cinerea* Tunstall, 1771	सलेटी खंजन Grey wagtail	प्रवासी
16	पासेरिफोर्म्स Passeriformes	स्टंरनिडे Sturnidae	*पास्टर रोसिअस* (लिनेअस, 1758) *Pastor roseus* (Linnaeus, 1758)	रोजी पास्टर Rosy starling	प्रवासी
17	पेलिकनिफोर्म्स Pelecaniformes	एरैड़े Ardeidae	*आर्दिओला ग्रेयी* (सिक्स, 1832) *Ardeola grayii* (Sykes, 1832)	अँधा बगुला Indian pond heron	निवासी
18	कुकुलिफोर्म्स Cuculiformes	कुकुलिडे Cuculidae	*युद्यनाम्य्स स्कोलोपासिअस* (लिनेअस, 1758) *Eudynamys scolopaceus* (Linnaeus, 1758)	एशियाई कोयल Asian koel	निवासी

डेटाबेस इबरडर की मेकौली लाइब्रेरी में शामिल किया गया. एक और घुमन्तु पक्षी है गल बिल्ल्ड कुररी *Gelochelidon nilotica* यह भी सर्दियों में इस जगह आम तौर पर दिखाई देते हैं. यह वर्ग विश्व भर में व्यापित है मगर जो दक्षिण भारत में आते हैं वो पाकिस्तान व अफगानिस्तान में प्रजनन का समय बिताकर सर्दियों में भारत आते हैं. यह कुररी मछलियों के बजाय ज्यादातर कीटों और केकड़ों का भोजन करता है.

यह संभव है कि अन्य वर्ग के प्रवासी पक्षी देवग़ाड से गुजरते होंगे. द्वीप का आबंधित वातावरण पक्षियों के लिए लाभदायक है. क्षेत्र भले ही छोटा हो वे यहाँ निर्बाध जी सकते हैं. द्वीप की वनस्पति को अपरिवर्तित रूप में बनाये रखना इसके लिए अनिवार्य है. अनेकों वर्ग के पक्षी यहाँ की झाड़ियों और घास में पलने वाले प्राणियों पर ही निर्भर हैं. आगे चलकर इस द्वीप में जब पर्यटन मेखला का आरम्भ हो तब इस बात का ध्यान रखना अनिवार्य है.

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।

- महात्मा गाँधी